श्री कुंथुनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री कुंथुनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.-9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री कुन्थुनाथ विधान

जय बोलिये

परम श्रद्धालु, परम दयालु,
परम कृपालु, परम धर्मालु,
जीव दया के मसीहा,
करुणा के अवतार,
सत्य अहिंसा के संरक्षक,
वात्सल्य के विस्तार,
ब्रह्मतत्त्व वेत्ता, कर्म शैल भेत्ता
परमपूज्य
श्री कुन्थुनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : इसे समझो न रेशम का तार.....)

जिन्हें कहते हैं, सभी कुन्थुनाथ स्वामी।
हम तो चरणों में, करें नमस्कार स्वामी॥

बन के आए हम भक्त पुजारी।
द्रव्य सँवारी है आरती उतारी॥
हम तो भक्ति से, करें बार-बार नमामि।
हम तो चरणों में.....॥ 1॥

आप बिना हम तो भव-भव में उलझे।
आतम परमातम को जाने न समझे॥
हमको दे दो अब, चरणों की छाँव स्वामी।
हम तो चरणों में.....॥ 2॥

नयना मुँदे आयु जैसे थमेगी।
कंचन-सी काया ये धूँ-धूँ जलेगी॥
इसकी माया से, नशवा दो मोह स्वामी।
हम तो चरणों में.....॥ 3॥

तुम से अहिंसा भी आतम भी नाँची।
तुम ही हो अरिहंतों सिद्धों के वाची॥
अब तो बतला दो, रत्नत्रय पंथ स्वामी।
हम तो चरणों में.....॥ 4॥

चरणों की धूली नहीं है मामूली।
कर्मों की धूली हर दे मुक्ति की डोली॥
अब दो 'सुव्रत' को, चरणों की धूल स्वामी।
हम तो चरणों में.....॥ 5॥

श्री कुन्थुनाथ विधान

स्थापना (दोहा)

जीव-दया के स्तम्भ हैं, कुन्थुप्रभु जिननाथ।
करुणा के अवतार को, झुकें भक्त के माथ॥

(राज, 19-मात्रिक)

भक्ति से हम कर रहे जिन वंदना।
द्रव्य लाये साथ करने अर्चना॥

आप कुन्थुनाथ प्यारे जिनवरम्।
आपने पाया स्वरूपी निज धरम्॥
आपको जिसने भी ध्याया ध्यान से।
विश्व ने पूजा उसे सम्मान से॥

कष्ट पीड़ा संकटों पर जय करे।
तोड़ कर के कर्मबंधन क्षय करे॥
हम सफल मानव बनें धर्मात्मा।
आइए मन में यही है प्रार्थना॥
भक्ति से हम .....।

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

पाप मिथ्या ने दिए जीवन मरण।
हमको साँची न मिली अब तक शरण॥
नीर के बदले हरो हर पाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं.....।

पा दशा प्रतिकूल हम ऊबे नहीं।
ज्ञान रस के कुण्ड में डूबे नहीं॥
चंदन के बदले हरो संताप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चन्दनं.....॥

कौन क्या पाते दुखी इस राग से।
काँप कर क्यों भागते वैराग्य से॥
पुंज के बदले हरो भव-चाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....॥

आत्मा का फूल अब तक ना खिला।
पा लिया सब किन्तु कुछ भी ना मिला॥
पुष्प के बदले हरो रति-नाथ को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....॥

चख लिया पकवान हर इक कर्म का।
ना लिया रस आत्म का ना धर्म का॥
नैवेद्य के बदले हरो अभिशाप को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....॥

आँखों के अंधे नयनसुख नाम है।
ऐसे ही मोही जनों का काम है॥
दीप के बदले हरो दुख-रात को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....॥

कस्तूरी नाभि में ले मृग भ्रम रहा।
गंध निज की पाने पर में रम रहा॥
गन्ध के बदले हरो, विधि-पाक को।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....॥

है कृपा सबसे बड़ी जिनदेव की।
जो मिले पा के कृपा गुरुदेव की॥
सुफल के बदले पुकारें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....॥

कुछ नहीं लाये चढ़ाने के लिए।
आए अपनी ही सुनाने के लिए॥
त्याग या अनुराग की इच्छा नहीं।
ली कभी चारित्र की दीक्षा नहीं॥
कोई भी आती नहीं सम्यक् कला।
अर्घ्य अर्पण के बिना क्या हो भला॥
इसलिए यह अर्घ्य सौपें आपको।
पूज्य कुन्थुनाथ वंदन आपको॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दशमी श्रावण कृष्ण को, सोलह स्वप्न दिखाए।
श्रीकान्ता के गर्भ में, कुन्थुनाथ प्रभु आए॥

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णदशम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

प्रथम शुक्ल वैशाख को, जन्मे कुन्थुजिनेश।
सूर्यसेन के आँगने, बाजे ढोल विशेष॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जन्म तिथि में चक्र तज, कुन्थुप्रभु तप धार।
जय-जय जिनशासन हुआ, जिन्हें नमन बहु बार॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

चैत्र शुक्ल की तीज में, पा कैवल्य सुवस्तु।
कुन्थुप्रभु अर्हंत को, हम तो करें नमोस्तु॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लतृतीयायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं....।

शिखर ज्ञानधरकूट से, मोक्ष कुन्थुप्रभु पाए।
मोक्ष जन्म तप साथ में, हम तो शीश नवाए॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लप्रतिपदायां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

कर्म हरण मुक्तिवरण, कुन्थुप्रभु के स्थान।
यूँ ही मिलते भक्त को, अतः करें गुणगान॥
चक्रवर्ति छठवे रहे, तेरहवे रतिनाथ।
सत्रहवे तीर्थेश की, करें भक्ति नत माथ॥

(ज्ञानोदय)

साधारण निगोद को तजकर, दुर्लभ तन प्रत्येक धरें।
एकेन्द्री को तजकर मणिसम, दुर्लभ तन त्रस प्राप्त करें॥
त्रस तजकर पंचेन्द्रिय दुर्लभ, पशू नारकी सुर-बनना।
नार नपुंसक भव को तजकर, अति दुर्लभ है नर बनना॥ 1॥

जन्म धारना उस भारत में, जहाँ अहिंसा कर्म पले।
देव शास्त्र गुरुओं की पूजा, श्रमण संस्कृति धर्म चले॥
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, बहे त्रिवेणी धरती पर।
ऐसे दुर्लभ दया धर्म को, बता रहे कुन्थु जिनवर॥ 2॥

यही कुन्थुप्रभु पिछले भव थे, रिपु-विजयी सिंहरथ राजा।
तब ही उल्कापात देखकर, धर्मी बन गए मुनिराजा॥

कैसे हो कल्याण विश्व का, जब रोया यों अन्तर-मन।
इतनी बढ़ी विशुद्धि तब ही, शुद्ध हुआ सम्यग्दर्शन॥ 3॥

तब तीर्थंकर प्रकृति बाँधी, और समाधिमरण करके।
स्वर्ग अनुत्तर पाया जिसको, त्याग दिया नर बन करके॥
सूरसेन नृप श्री कान्ता माँ, हस्तिनागपुर हुए खुशी।
इन्द्र जन्म अभिषेक पर्व कर, नाम कुन्थु रख हुए सुखी॥ 4॥

राजा बने मण्डलेश्वर फिर षट्खण्डों के अधिकारी।
जातिस्मरण से आत्म ज्ञान पा, की शिवपथ की तैयारी॥
लौकान्तिक का अनुमोदन पा, चले पालकी विजया से।
तुरत सहेतुक वन में जाकर, हुए सुशोभित दीक्षा से॥ 5॥

धर्ममित्र ने पंचाश्चारी, दीक्षा का आहार दिया।
सोलह वय छद्मस्थ बिताकर, तेला वाला नियम लिया॥
तिलक वृक्ष के नीचे स्वामी, बन बैठे केवलज्ञानी।
समवसरण की सभा लगी तो, सबने सुनी दिव्यवाणी॥ 6॥

श्री सम्मेदशिखर पर जाकर, मासिक योग निरोध किए।
कर्म हरणकर, मुक्ति वरणकर, मोक्ष कुन्थुप्रभु प्राप्त किए॥
कामदेव को काय-कान्ति तो, कुछ भी नहीं सुहायी थी।
चक्रेश्वर को कनक-कामिनी, कभी लुभा ना पायी थी॥ 7॥

तीर्थंकर को कर्मन-कड़ियाँ, कस न सकी चट-चट टूटीं।
त्रय पदधारी कुन्थुनाथ की, कर्म-कालिमा झट छूटी॥
कुन्थु नाम बस कर्म हरे सब, बुध ग्रह की क्या बात रही?
कनक-कामनी तज, कंचन सी, आतम पाते भक्त सही॥ 8॥

जैसा आप कहोगे स्वामी, वैसा हम क्या कर न सकें?
किन्तु अकेले तड़प रहे हम, विरह वेदना सह न सकें॥

अतः रिझाने तुम को आये, हम पर नाथ रीझ जाओ।
'सुव्रत' तो हो चुके तुम्हारे, तुम 'सुव्रत' के हो जाओ॥ 9॥

(सोरठा)

बकरा जिनका चिह्न, कुन्थुनाथ प्रभु नाम है।
करुणाकर चैतन्य, प्रभु को सतत प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं.....।

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

विधान अर्घ्यावली

(श्रावकों के 17 नियम)

(हाकलिका)

कितनी बार पियें खालें, प्रतिदिन नियम यही पालें।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 1॥

ॐ ह्रीं आहार हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कितने रस षट्रस लेना, प्रतिदिन नियम बना लेना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 2॥

ॐ ह्रीं रस षट्रस हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

सौंफ सुपारी प्रतिदिन में, कितनी बारी भोजन में।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 3॥

ॐ ह्रीं सौंफताम्बूलादि हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

तन शृंगार विलेपन का, नियम अहिंसक प्रतिदिन का।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 4॥

ॐ ह्रीं प्रसाधनसामग्री हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पुष्प पुष्प-मालाओं का, दैनिक नियम पुण्य मौका।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 5॥

ॐ ह्रीं सुगंध हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कितनी बार पान खाना, नियम तनिक तो अपनाना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 6॥

ॐ ह्रीं स्वाद हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कितने गीत श्रवण करना, कितने वाद्य यन्त्र सुनना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 7॥

ॐ ह्रीं वाद्ययंत्रगीतसंगीत हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कितनी बार नृत्य करना, दैनिक कैसे कब करना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 8॥

ॐ ह्रीं नृत्य हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दिन पक्षों या वर्षों का, ब्रह्मचर्य हो भक्तों का।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 9॥

ॐ ह्रीं भोगोपभोग हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कितनी बार नहाना है, दैनिक नियम बनाना है।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुनाथ को करके॥ 10॥

ॐ ह्रीं देहमैल हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कितने आभूषण रखना, प्रतिदिन कितनों से सजना।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 11॥

ॐ ह्रीं आभूषण हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कितनी बार वस्त्र बदलो, कितने पहनो या रख लो।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 12॥

ॐ ह्रीं वस्त्र हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पलंग चटाई विस्तर के, कंबल तकिया चादर के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 13॥

ॐ ह्रीं शैय्या हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

कुर्सी सोफा पाटे के, करो नियम बिन घाटे के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 14॥

ॐ ह्रीं आसन हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

यन्त्रों वाहन गाड़ी के, कर लो नियम सवारी के।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 15॥

ॐ ह्रीं यात्री वाहन हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

कौन दिशा में आज चलें, कितनी दूरी पार करें।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 16॥

ॐ ह्रीं दिशाशूल हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

अन्य प्रयोजन की वस्तु, सीमित कर बाकी तज तू।
ये लें नियम बिना डर के, नमन कुन्थुप्रभु को करके॥ 17॥

ॐ ह्रीं क्रम संख्या हीनाधिकताभाव समताधारणार्थं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

(गृहस्थ के 17 यम) (सखी)

विपरीत स्वरूपी कुगुरु को, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध स्वरूपी बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 18॥

ॐ ह्रीं दिशाविभ्रमदाताकुगुरुभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विपरीत स्वरूपी प्रभु को, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध निजातम पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 19॥

ॐ ह्रीं लक्ष्यविभ्रमदाताकुदेवभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

विपरीत कुधर्म की सेवा, सब तजो कहें प्रभु कुन्थु।
सो शुद्ध निजानुभव को, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 20॥

ॐ ह्रीं साधनविभ्रमदाता कुवृषभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

नहीं कोई प्रयोजन जिसका, तज अनर्थदण्ड की वस्तु।
सो शुद्ध अखण्डित बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 21॥

ॐ ह्रीं आयोजनविभ्रमदाता अनर्थदण्डभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

जो योग्य न, पाप सहित वो, व्यापार तजो हर वस्तु।
सो शुद्ध भाव रस चखने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 22॥

ॐ ह्रीं विचारविभ्रमदाता अयोग्यव्यापारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

बाजी या दाव लगाना, तज जुआ हमेशा को तू।
सो शुद्ध ज्ञान गुण पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 23॥

ॐ ह्रीं वित्तविभ्रमदाता जुआभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

आजीवन मन वच तन से, तज माँस, माँसमय वस्तु।
सो शुद्ध क्रिया अपनाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 24॥

ॐ ह्रीं हिंसकक्रियादाता माँसाहारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो सात गाँव जलने का, दे पाप शहद वह तज तू।
सो शुद्ध स्वस्थ रत होने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 25॥

ॐ ह्रीं अशुद्धिदाता मधुसेवनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो शील रहित नर नारी, उनको आजीवन तज तू।
सो शुद्ध ब्रह्म में रमने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 26॥

ॐ ह्रीं अब्रह्मदाता वेश्यागमनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पर पुरुष और नारी में, तज रमण हमेशा को तू।
सो शुद्ध निलय में वसने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 27॥

ॐ ह्रीं पराभवदाता परस्त्रीरमणभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

गिरी गुमी पड़ी वस्तु को, ले लेना चोरी तज तू।
सो शुद्ध द्रव्य निज पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 28॥

ॐ ह्रीं अपयशदाता चोरीभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

हिंसक चीजों का देना, तज हिंसादान सदा तू।
सो शुद्ध अभय सुख पाने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 29॥

ॐ ह्रीं भयप्रदाता हिंसादानभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो शौक जीव को मारे, तज पाप शिकार सदा तू।
सो शुद्ध चिदातम रुचि को, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 30॥

ॐ ह्रीं व्यर्थप्राणघातदाता शिकारभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

संकल्प सहित त्रस हिंसा, जीवन में कभी न कर तू।
सो शुद्ध निराकुल बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 31॥

ॐ ह्रीं संकल्प अभावदाता त्रसहिंसाभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जो झूठ हरे जीवन को, वो आजीवन को तज तू।
सो शुद्ध बनाने सत्ता, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 32॥

ॐ ह्रीं समस्तकलहदाता स्थूल असत्यभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जो देह धर्म का नाशी, वह बिना छना जल तज तू।
सो शुद्ध निरंजन बनने, हो कुन्थुप्रभु को नमोस्तु॥ 33॥

ॐ ह्रीं संकटदाता जीवाणीरहितजल उपयोगिताभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

निज पर की दया हरे जो, वह रात्रि-भोजन तज तू।
सो शुद्ध-आत्म भोजन को, हो कुन्थु प्रभु को नमोस्तु॥ 34॥

ॐ ह्रीं अदयादाता रात्रिभोजनभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

तुम यद्यपि कुछ नहीं देते, नहिं स्वीकारो कुछ स्वामी।
हो दर्पण सम अविकारी, सो तुमको नाथ! नमामी॥
फिर भी जो सुमुख तुम्हारे, वह आतम भाग्य सँभारें।
लेकिन जो विमुख तुम्हीं से, वह अपना भाग्य बिगाड़ें॥

हम अपना भाग्य सजायें, सो सुमुख हुए शरणों में।
जो जैसा भी है लेकिन, है अर्घ्य भेंट चरणों में॥
विश्वास हमें है ऐसा, हम शीघ्र सफल ही होंगे।
जिन चरण पकड़कर स्वामी, हम मोक्ष महल में होंगे॥ 18॥

ॐ ह्रीं सम्पूर्ण आत्मिकविभावविनाशनसमर्थ श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

चिदानन्द आनन्द हो, प्रभु चैतन्य निधान।
नमन हमारा है उन्हें, जो कुन्थु भगवान्॥

करें उन्हीं की वन्दना, करें उन्हीं का ध्यान।
जिनका कण-कण वास है, उनका करें बखान॥

(भुजंगप्रयात)

जहाँ देख लो तो दया ही दिखे रे।
दया के अलावा कहो क्या दिखे रे।
न कोई यहाँ जो दया छोड़ देंगे।
दया धर्म से राह ही मोड़ लेंगे॥ 1॥

जिन्होंने ने गिराया दया का किला है।
उन्हीं को कुआ नर्क का भी मिला है।
मिटायी जिन्होंने दया भावना को।
उन्हीं की न पूरी हुई कामना हो॥ 2॥

जिन्होंने दया को पराई कही है।
उन्हीं ने महा कष्ट पीड़ा सही है॥
भुलायी जिन्होंने दया की कथा को।
वही पाए तिर्यंच जैसी व्यथा को॥ 3॥

नहीं जीव होते दया से सुखी ही।
कहें जो यही वो रहेंगे दुखी भी॥
विभावी कहें जो दया धर्म को वो।
विरागी न वो बाँधता कर्म को तो॥ 4॥

कि जब तक रहेंगे सितारे गगन भी।
रहेंगे धरा धाम जब तक मगन ही॥
कि जब तक नदी और सिंधु रहेंगे।
चमकते रवि और इंदु रहेंगे॥ 5॥

कि जब तक खिलेगी बहारें यहाँ पै।
बरसतीं रहें मेघ धारें यहाँ पै॥
कि पानी हवा आग जब तक रहेंगे।
कि इस देह में प्राण जब तक रहेंगे॥ 6॥

कि जब तक चिदातम जियेंगे यहाँ भी।
कि जब तक जिनागम रहेंगे यहाँ भी॥
न कोई दया को मिटा पाएँगे वो।
नहीं भक्त भगवन् भुला पाएँगे सो॥ 7॥

नियम और संयम पलेंगे यहाँ भी।
कि श्रावक श्रमण नित मिलेंगे यहाँ भी॥
कि कुन्थुप्रभु की करेंगे विनय हम।
कृपा प्राप्त करके करेंगे विजय हम॥ 8॥

मिले अर्चना का यही फल हमें भी।
तुम्हारे चरण की मिले रज हमें भी॥
तुम्हारी शरण भी हमें चाहिए है।
मिला आपको वो हमें चाहिए है॥ 9॥

रुलाओ हँसाओ बुलाओ हमें तो।
जगाओ सुलाओ भगाओ हमें तो॥
बिठाओ उठाओ बनाओ हमें तो।
मिलाओ मिटाओ सजाओ हमें तो॥ 10॥

ये अर्जी हमारी सुनायी तुम्हें है।
तुम्हारे सिवा कौन पूछे हमें है॥
जो मर्जी तुम्हारी करो तुम वही तो।
कि हम तो रखे भावना बस यही तो॥ 11॥

हमें भी बुला लो निजी ग्राम में तुम।
हमें भी मिला लो निजी धाम में तुम॥
कि 'सुव्रत' पुकारें सदा आपको ही।
कि जल्दी हरो रोग गम पाप को भी॥ 12॥

(सोरठा)

दया धर्म है सार, कुन्थुप्रभु के जिन-वचन।
दया निजातम द्वार, अतः कुन्थुप्रभु को नमन॥
ये इच्छा हो पूर्ण, हिंसा का ताण्डव टले।
कर्म शिला हो चूर्ण, दया धाम आतम मिले॥

ॐ ह्रीं श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

(दोहा)

कुन्थुनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, कुन्थुनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

॥ इति श्री कुन्थुनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
पूर्ण 'पवाजी' में हुआ, कुन्थुनाथ विधान॥
दो हजार चौदह गुरु, जनवरी थी तेईस।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : मधुवन के मन्दिरों में....)

दीपक जला के लाये, हम आरती उतारें।
कुन्थुप्रभुजी अपने, हैं भाग्य के सितारे॥

नृप सूर्यसेन के तुम, थे पुत्र आज्ञाकारी।
संस्कार दात्री जग में, श्री कांता माँ तुम्हारी॥
जन्मे श्री हस्तिनापुर[2], सौभाग्य हैं हमारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥ 1॥

तुम आत्म ज्योति पा के, संसार मोह छोड़े।
फिर वीतरागी बन के, मुक्ति से नाता जोड़े॥
अज्ञान अंध हरने[2], ये दीप हम उजारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥ 2॥

हमने सुना है तुम हो, तेजस्वी सूर्य से भी।
होते न अस्त, बाधित, न राहु केतु से भी॥
वरदायिनी किरण के[2], दे दो चरण सहारे।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥ 3॥

दीपक तले अँधेरा, सब विश्व में भरा है।
तुम ही बताओ तुम बिन, जो साँचा है खरा है॥
'सुव्रत' जपें अब 'सोहं', परमात्म को पुकारें।
कुन्थुप्रभुजी अपने ...॥ 4॥